Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh

Date - Class - V

Subject - Hindi Literature Page - 1

Subject Teacher - Ms Roma Rani

पाठ - 9 (कठपुतलियों का संसार)

पाठ बोध

1. प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें -

(क) शैली और शौर्य कठपुतली की तीन दिवसीय कार्यशाला में भाग लेने बालकेंद्र में आए थे।

(ख) कठपुतली के चेहरे पर आँख, नाक और मुँह बनाने की प्रक्रिया को बच्चे एकाग्रता से देख रहे थे।

(ग) बारीक धागों से कठपुतलियों को बाँधा जाता है। इनकी सहायता से ही ये हिलती डुलती और नाचती हैं।

(घ) कठपुतली की परंपरा राजस्थान, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल तथा आंध्र प्रदेश तक फैली हुई है।

2. प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें -

(क) कठपुतली कार्यशाला का वातावरण संगीतमय और खुशनुमा था। सारंगी की मधुर धुन और ढोलक की थाप चारों तरफ़ गूँज रही थी। राजस्थानी वेश-भूषा वाले पुरुष और स्त्रियाँ सुघड़ हाथों से बेजान पुतलियों को सजा - सँवार रहे थे।

(ख) महिला ने बच्चों को बताया कि पहले कठपुतली कलाकार समूह में गाँव - गाँव घूमते थे और तरह-तरह की कहानियों को नाटक के रूप में दिखाते थे। वही उनकी जीविका का साधन भी था। अब

__/__/____

Date- Class - V
Subject - Hindi Literature Page - 2
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

हमारे दिल्ली में बसे हुए कलाकार इस कला को जन सामान्य तक पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं।

(ख) लकड़ी के एक टुकड़े को हाथ में लेकर घिसाई करके उसे पुतली का रूप दिया जाता है। फिर कठपुतली के चेहरे पर आँख, नाक, मुँह बनाया जाता है। अंत में उसे रंग-बिरंगे कपड़ों और गहनों से सजा दिया जाता है।

(घ) हज़ारों साल पुरानी होने के बावजूद कठपुतली कला से आज भी महिला शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा जैसे विषयों पर आधारित कार्यक्रम और हास्य-व्यंग्य भी दिखाए जाते हैं। अब कठपुतली का तमाशा केवल मनोरंजन ही न रहकर शिक्षा कार्यक्रमों, सिर्च, विज्ञापनों आदि के क्षेत्र में प्रचार का माध्यम भी है।

Last page.